Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता विद्यालयों के प्रति अभिधारकों का अभिमत

डॉ. हरीश कुमार मेनारिया [1*], श्रीमती मोहसीना बानू [2]

[1] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, ज.रा.ना.रा.वि. विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] व्याख्याता, मीरां टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. हरीश कुमार मेनारिया

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19416702

सारांश

प्रस्तुत शोध में पीएम. श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति अभिधारकों के अभिमत का अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य मे मुख्य उद्देश्य बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों का अभिमत का अध्ययन करना एवं ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों अध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में 50 शिक्षक, 30 अभिभावक का चयन किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-02-2026
- **Accepted:** 28-03-2026
- **Published:** 04-04-2026
- **MRR:**4(4); 2026: 15-20
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता विद्यालयों के प्रति अभिधारकों का अभिमत'. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(4):15-20.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: पीएम.श्री विद्यालय, बाल-वाटिका, अभिधारक

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा और साक्षरता अज्ञानता का अंधियारा दूर कर ज्ञान की रोशनी फैलाती है। शिक्षा का उच्च स्तर समाज में जागरूकता को बढ़ावा देता है तथा उसके आर्थिक व सामाजिक उत्थान में प्रेरक के रूप में कार्य करता है। राजस्थान में मध्यकालीन समय से ही लोक शिक्षा एक परम्परा रहीं है। राज्य के एकीकरण के पश्चात् राज्य सरकार ने राज्य के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था के सुचारू संचालन हेतु 1950 में बीकानेर में प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की स्थापना की।

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए वर्ष 1997 में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर का विभाजन कर बीकानेर में ही पृथक-पृथक प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की स्थापना की गई तथा 1964-66 में कोठारी आयोग का गठन किया गया जिसको राष्ट्रीय शिक्षा आयोग भी कहा जाता है। इसके पश्चात् शिक्षा नीति 1986 का गठन हुआ। तत्पश्चात् राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 को प्रस्तुत किया गया जिसमें कहा गया कि उच्च प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर त्रिभाषाई सूत्र पर बल देना चाहिए जिसमें स्थानीय भाषा (मातृभाषा), राज्य भाषा (हिन्दी), अन्तर्राष्ट्रीय भाषा (अंग्रेजी) शामिल है। देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के लिए अभी भी और अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। वर्तमान समय वैश्वीकरण का है। शिक्षा में सतत् विकास के वैश्विक लक्ष्यों के साथ संरक्षण करने के लिए वैश्विक शिक्षा के विकास ऐजेंडा की दिशा में सतत् प्रयास करने की महत्ती आवश्यकता है जिसके लिए अंग्रेजी का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे राज्य के विद्यार्थी वैश्विक समुदाय के साथ संरक्षण कर अपना भविष्य तलाश सके। राजस्थान हिंदीभाषी प्रदेश होने से प्रायः देखा जा रहा है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् अधिकतर विद्यार्थी अंग्रेजी में अपेक्षाकृत उपलब्धि प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करते है।

2. शोध के उद्देश्य

शोधकर्ता द्वारा अपने शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया जो इस प्रकार से है-

1. पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।
3. पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति अभिभावकों के अभिमत का अध्ययन करना।
5. पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अभिभावकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शोध परिकल्पनाएं

विषय की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:-

1. पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बालवाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अभिभावकों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. पारिभाषिक शब्दावली

समस्या के पारिभाषिक शब्दों को स्पष्ट करने का तात्पर्य उसमें प्रयुक्त शब्दों को विस्तृत रूप व सही प्रकार से सुनियोजित बनाना है।

इन विशेष शब्दों का प्रयोग शोधकार्य में विशेष रूप से किया गया है। अतः आवश्यक हो गया है कि जिन अर्थों में शोधार्थी द्वारा शब्दों का प्रयोग किया गया उन्हीं के सन्दर्भ में अन्य व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किया जावे। इस हेतु शब्दों की व्यवस्था करना आवश्यक समझा गया।

1. **पीएम श्री विद्यालय:** प्रस्तुत शोध में पीएम.श्री विद्यालयों से तात्पर्य है कि निचले स्तर के छात्रों को अंग्रेजी माध्यम के सरकारी विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके तथा इनका अभिप्राय शिक्षा के क्षेत्र में लगातार प्रगति से है।
2. **अभिधारक:** अभिधारक शब्द से अभिप्राय है विद्यार्थी, शिक्षक, प्राचार्य एवं अभिभावकों के समूह से है। प्रस्तुत शोध में पीएम.श्री विद्यालयों के प्रति विद्यार्थी शिक्षक, प्राचार्य एवं अभिभावक क्या सोचते हैं।
3. **अभिमत:** अभिमत जनतंत्र का प्रमुख स्तम्भ है। वस्तुतः अभिमत किन्हीं मुद्दों पर दी गई अभिव्यक्ति है। एक व्यक्ति का मत दूसरे से भिन्न हो सकता है। किन्तु अभिमत व्यक्तिगत मत से भिन्न नहीं है। व्यक्तिगत मत की अभिरूचि भी हो सकती है। अभिमत व्यापक अर्थों में एक राष्ट्र के जीवन का विस्तृत संवेग है। समाजशास्त्री इसे लोगों की संस्कृति कहते है। किसी विषय-वस्तु या मुद्दों के बारे में कोई क्या सोचता है, वही अभिमत कहलाता है।

5. न्यादर्श

किसी भी समस्या के लिए जनसंख्या का वह भाग जो कि सम्पूर्ण जनसंख्या को प्रतिनिधित्व करें न्यादर्श कहलाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया गया-

1. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया जायेगा।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया जिसे निम्न सारणी द्वारा दर्शाया गया है-

क्र.सं.	समूह	संख्या	ग्रामीण	शहरी
1	शिक्षक	50	25	25
2	अभिभावक	30	15	15

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

6. शोध विधि

प्रस्तुत शोध में पीएम श्री विद्यालयों के प्रति अभिधारकों के अभिमत से सम्बन्धित दत्तों का संकलन करना है जो कि सर्वे से सम्बन्धित है तथा इसका संख्यात्मक व गुणात्मक विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। अतः से शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

7. शोध उपकरण

किसी भी शोध अध्ययन हेतु दत्तों के संकलन हेतु जिस प्रश्नावली या प्रमापनी का प्रयोग किया जाता है उसको उपकरण कहते हैं। सामान्यतया ये दो प्रकार के होते हैं-

1. मानकीकृत उपकरण
2. स्वनिर्मित उपकरण

प्रस्तुत शोध में मानकीकृत उपकरण की अनुपलब्धता होने से शोधकर्ता स्वनिर्मित अभिमतावली का निर्माण किया गया।

8. विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य-1 पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।

पीएम.श्री: विद्यालयों के प्रति शिक्षकों के अभिमत जानने के लिए विद्यार्थियों का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण इस प्रकार है-

सारणी संख्या 4.1: पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति शिक्षकों के अभिमत का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र	कट पॉइंट मध्य मान	मध्यमान
1	पृष्ठभूमि	5–10	11.00
2	बालवाटिकाओं के संसाधन	5–10	11.52
3	प्रशिक्षण एवं शिक्षण क्षमता	4–8	9.40
4	शिक्षण अभ्यास और पाठ्यक्रम	5–10	10.84

आरेख संख्या-4.1:

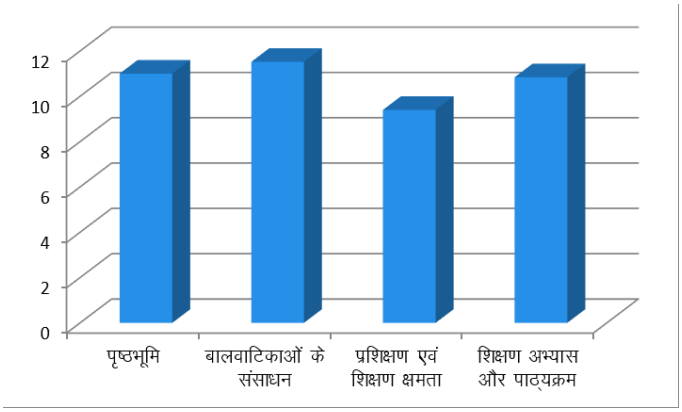

सारणी संख्या 4.2: पीएम. श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयताके प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षको के अभिमत का टी मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	अध्ययन के आयाम	मध्यमान (ग्रामीण शिक्षक)	मध्यमान (शहरी शिक्षक)	प्रमाप विचलन (ग्रामीण)	प्रमाप विचलन (शहरी)	टी-मान	0.05/0.01 स्तर पर सार्थकता
1	पाठ्यक्रम	10.86	11.12	2.61	2.77	0.30	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2	मूल्यांकन	11.04	12.00	2.55	2.27	1.37	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
3	व्यक्तिगत समस्या	9.32	9.56	2.67	2.08	0.34	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
4	भौतिक संसाधन	11.16	10.56	1.90	2.98	0.82	सार्थक अंतर नहीं पाया गया

आरेख संख्या-4.2

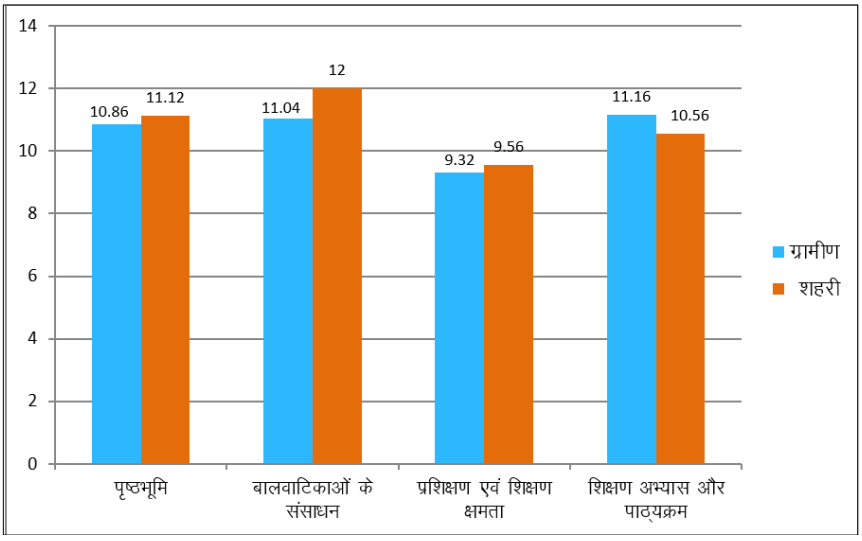

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उद्देश्य-3: राजकीय पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बाल- वाटिकाओं की उपादेयता प्रति समग्र अभिभावकों के अभिमत का अध्ययन करना।

परिणाम

पी एम श्री: विद्यालयों के प्रति समग्र अभिभावकों के अभिमतों का साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर विश्लेषण।

1. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालय के बारे में अभिभावकों को जानकारी है परन्तु सम्पूर्ण जानकारी का आभाव है मध्यम वर्ग के परिवार के लिये अपने बच्चों को: में शिक्षित करने की अच्छी योजना है।
2. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री**: विद्यालय के द्वारा बालक-बालिकाओं का: विद्यालयों में पढ़ने का सपना पूर्ण हो रहा है: में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। निजी स्कूलों में भारी फीस के बोझ से अभिभावकों को राहत मिल रही हैं।
3. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो पोषाहार दिया जा रहा है उससे बालक स्वयं अभिभावक से स्कूल जाने के लिए कहते हैं तथा किसी कारणवश अभिभावक भोजन नहीं बना पाये तो भी स्कूल जाने में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं रहती हैं।
4. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो शैक्षणिक पाठ्य सामग्री प्रदान की जा रही है व गुणवत्ता पूर्ण होती है तथा अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक भार नही आता है तथा बालक-बालिकाओं को पड़ने में समस्या का सामना नही करना पड़ता है।
5. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों का मानना है कि इसका अखबार टी.वी व गाँव-गाँव में पोस्टर लगवाये जाये तथा स्थानीय लोगो से इसकी रिपोर्ट ली जाये ताकि इन विद्यालयों को प्रभावशाली बनाया जा सके।
6. **अभिभावकों का मानना की सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में अध्ययन के दौरान उनके बालक-बालिकाओं की दैनिक दिनचर्या में सुधार हुआ है।

उद्देश्य-6: राजकीय "पीएम.श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति समग्र ग्रामीण व शहरी अभिभावकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिणाम-

पी.एम.श्री: विद्यालयों के प्रति समग्र ग्रामीण व शहरी अभिभावकों के अभिमतों का साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर विश्लेषण ।

1. **सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालय से संबंधित ग्रामीण अभिभावकों को जानकारी शहरी अभिभावकों की अपेक्षा अधिक नहीं है मध्यम वर्ग के परिवार के लिये अपने बच्चों को शिक्षित करने की अच्छी योजना है।
2. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री: विद्यालय के द्वारा बालक-बालिकाओं का:** विद्यालयों में पढ़ने का सपना पूर्ण हो रहा है: में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है।निजी स्कूलों में भारी फीस के बोझ से अभिभावकों को राहत मिल रही है।
3. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो पोषाहार दिया जा रहा है उससे बालक स्वयं अभिभावक से स्कूल जाने के लिए कहते हैं तथा किसी कारणवश अभिभावक भोजन नहीं बना पाये तो भी स्कूल जाने में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं रहती है।
4. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो शैक्षणिक पाठ्य सामग्री प्रदान की जा रही है व गुणवत्ता पूर्ण होती है तथा अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक भार नही आता है तथा बालक-बालिकाओं को पढ़ने में समस्या का सामना नही करना पड़ता है।
5. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के पढ़ने पर उनका अंग्रेजी भाषा के स्तर में सुधार हुआ है।
6. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों का मानना है कि इसका अखबार टी.वी व गाँव-गाँव में पोस्टर लगवाये जाये तथा स्थानीय लोगो से इसकी रिपोर्ट ली जाये ताकि इन विद्यालयों को प्रभावशाली बनाया जा सके।
7. **ग्रामीण व शहरी स्तर पर अभिभावकों का मानना की सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम श्री:** विद्यालयों में अध्ययन के दौरान उनके बालक- बालिकाओं की दैनिक दिनचर्या में सुधार हुआ है।

9. शोध से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष उद्देश्यानुसार इस प्रकार है-

उद्देश्य-1 पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करना।

1. पृष्ठभूमि: पीएम. श्री विद्यालयों के प्रति अभिधारको के अभिमत के क्षेत्र पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षको का अभिमत सकारात्मक पाया गया।

2**. बालवाटिकाओं के संसाधन:** पीएम. श्री विद्यालयों के प्रति अभिधारको के अभिमत के क्षेत्र मूल्यांकन के प्रति शिक्षको का अभिमत सकारात्मक पाया गया।

3. प्रशिक्षण एवं शिक्षण क्षमता: पीएम. श्री विद्यालयों के प्रति अभिधारको के अभिमत के क्षेत्र व्यक्तिगत समस्या के प्रति शिक्षको का अभिमत सकारात्मक पाया गया।

4. शिक्षण अभ्यास और पाठ्यक्रम: पीएम श्री विद्यालयों के प्रति अभिधारको के अभिमत के क्षेत्र भोतिक संसाधन के प्रति शिक्षको का अभिमत सकारात्मक पाया गया।

उद्देश्य-2: पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षको के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1. पृष्ठभूमि- पीएम श्री विद्यालयों के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षको के अभिमत अभिमतावली के क्षेत्र पाठ्यक्रम के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का अभिमत समान पाया गया।

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. **बालवाटिकाओं के संसाधन**: पीएम श्री विद्यालयों के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षको के अभिमत अभिमतावली के क्षेत्र मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का अभिमत समान पाया गया।
3. **प्रशिक्षण एवं शिक्षण क्षमता**: पीएम श्री विद्यालयों के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षको के अभिमत अभिमतावली के क्षेत्र मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का अभिमत समान पाया गया।
4. **शिक्षण अभ्यास व पाठ्यक्रम**: पीएम श्री विद्यालयों के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षको के अभिमत अभिमतावली के क्षेत्र मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण व शहरी शिक्षकों का अभिमत समान पाया गया।

उद्देश्य-3 पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल- वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति समग्र प्राचार्यो के अभिमत का अध्ययन करना ।

1. पीएम.श्री विद्यालय के रूप में सन 2022 में रूपांतरित किया गया।
2. पीएम.श्री विद्यालय का सुचारू रूप से संचालन करना तथा उसके लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना।
3. पीएम.श्री विद्यालय के क्रियान्वयन में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
4. हमारे पीएम. श्री विद्यालय का तथा कक्षा-कक्ष का निरीक्षण प्रतिदिन नियमित रूप से किया जाता है। तथा कुछ त्रुटियाँ पाए जाने पर उन त्रुटियों को सुधारने हेतु आवश्यक सुझाव प्रदान किये जाते है।
5. हमारे पीएम. श्री विद्यालय में 1. वन्दना 2. शारीरिक गतिविधियाँ. साँस्कृतिक गतिविधियाँ 4. वैज्ञानिक गतिविधियाँ. 5 बौद्धिक गतिविधियाँ 6 नो बैग डे आदि गतिविधियाँ संचालित होती है।
6. पीएम. श्री विद्यालय के संचालित होने पर विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है।
7. हमारे पीएम. श्री विद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक एवं शारीरिक विकास हेतु व्यायाम खेलकूद मनोरंजन नो बैग डे आदि गतिविधियाँ आयोजित की जाती है।
8. पीएम. श्री विद्यालय के प्रभावी संचालन हेतु सरकार द्वारा समय पर तथा पर्याप्त बजट उपलब्ध कराया जाये। जिस पीएम. श्री विद्यालय का संचालन सर्वश्रेष्ठ हो उस विद्यालय के संस्थाप्रधान को राज्य या केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिससे अन्य विद्यालय के प्राचार्य भी प्रोत्साहित हो सके। साथ ही विद्यालयों का समय-समय पर लेखा जोखा रखना चाहिए तथा निरीक्षण करवाना चाहिए।

उद्देश्य-4: पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल- वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति समग्र अभिभावकों के अभिमत का अध्ययन करना। सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालय के बारे में मध्यम वर्ग के परिवार के लिये अपने बच्चों कों अंग्रेजी माध्यम में शिक्षित करने की अच्छी योजना है।

1. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालय के द्वारा बालक-बालिकाओं का अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पढ़ने का सपना पूर्ण हो रहा है अंग्रेजी माध्यम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है।
2. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो पोषाहार दिया जा रहा है उससे बालक स्वयं अभिभावक से स्कूल जाने के लिए कहते हैं।
3. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो शैक्षणिक पाठ्य सामग्री प्रदान की जा रही है व गुणवत्ता पूर्ण होती है।
4. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के पड़ने पर उनका भाषा के स्तर में सुधार हुआ है।
5. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों का मानना है कि इसका अखबार टी.वी व गाँव गाँव में पोस्टर लगवाये जाये।
6. अभिभावकों का मानना की सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों में अध्ययन के दौरान उनके बालक-बालिकाओं की दैनिक दिनचर्या में सुधार हुआ है।

उद्देश्य-5: पीएम श्री विद्यालयों में संचालित बाल-वाटिकाओं की उपादेयता के प्रति समग्र ग्रामीण व शहरी अभिभावकों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

1. सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालय से संबंधित ग्रामीण अभिभावकों को जानकारी शहरी अभिभावकों की अपेक्षा अधिक नहीं है मध्यम वर्ग के परिवार के लिये अपने बच्चों को भाषा और गणित में शिक्षित करने की अच्छी योजना है।
2. ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालय के द्वारा बालक-बालिकाओं का विद्यालयों में पढ़ने का सपना पूर्ण हो रहा है।
3. ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों की बालवाटिकाओं में बालक-बालिकाओं को जो पोषाहार दिया जा रहा है उससे बालक स्वयं अभिभावक से स्कूल जाने के लिए कहते हैं।
4. ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों में बालक-बालिकाओं को जो शैक्षणिक पाठ्य सामग्री (फ्लेयर कार्ड, रंग आकार के चार्ट, मिट्टी, रेत पानी की गतिविधियां प्रदान की जा रही है व गुणवत्ता पूर्ण होती है तथा अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक भार नही आता है।
5. ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों बालवाटिकाओं में बालक-बालिकाओं के पढ़ने पर उनका भाषा के स्तर में सुधार हुआ है
6. ग्रामीण व शहरी स्तर पर सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालयों को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों का मानना है कि इसका अखबार टी.वी व गाँव गाँव में पोस्टर लगवाये जाये तथा स्थानीय लोगो से इसकी रिपोर्ट ली जाये ताकि इन विद्यालयों को कैसे प्रभावशाली बनाया जा सके।
7. ग्रामीण व शहरी स्तर पर अभिभावकों का मानना की सरकार द्वारा वर्तमान में संचालित पीएम. श्री विद्यालय विद्यालयों में अध्ययन के दौरान उनके बालक-बालिकाओं की दैनिक दिनचर्या में सुधार हुआ है।

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

10. भावी शोध हेतु सुझाव:

1. प्रस्तुत शोध को बड़े न्यादर्श लेकर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध को सरकार द्वारा संचालित अन्य राजकीय विद्यालयों के प्रति अभिधारकों का अभिमत लिया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध को अन्य विद्यालयों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध को निजी व राजकीय अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की योजनाओं को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध को राष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा संचालित विद्यालय सम्बन्धित योजनाओं को लेकर प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है।

11. उपसंहार

यह अंतिम परिच्छेद है। इसमें शोध सारांश, निष्कर्ष एवं भावी शोध हेतु सुझाव दिये गये है जो किसी न किसी रूप में शिक्षा के लिये महत्वपूर्ण है। अपने अध्ययन कार्य का छोटे रूप में एवं समय व साधनों की सीमितता में पूर्ण करने के कारण इनके परिणामों एवं निष्कर्षों की अनुसंधान अथाह ज्ञान के भण्डार में खुलने वाला वह द्वार है जिसमें प्रवेश कर व्यक्ति स्वयं को ज्ञान से सम्पन्न करता है तथा समाज व राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देता है। आशा की जाती है कि ज्ञान की यह यात्रा जो अनादि काल से चली आ रही है, उन्नत काल तक चलती रहेगी, तथा ज्ञान का प्रकाश इसी तरह सम्पूर्ण मानवता के पथ को आलोकित करती रहेगी। प्राप्त परिणामों एवं भविष्य में होने वाले शोध कार्यों को कुछ प्रेरणा मिल सकेगी। शोधकर्ता ऐसी आशा करता है।

REFERENCES

1. Best JW. *Research in Education*. New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.; 1963.
2. Bhatnagar BN. *Reading Difficulties of Class VI Students in Hindi* [MEd dissertation]. Rajasthan University; 1961.
3. Rajendram M. *Activity Centered Teaching of English: An Experimental Study*. 1992.
4. Vajpaye AB. *A Comparative Study of Letter Method and Sentence Method of Teaching Hindi*. Rajasthan: SIERT; 1968.
5. Best JW. *Elements of Educational Research*. USA: Prentice Hall Inc.; 1950/1960.
6. Bhatnagar JK. A cross-cultural study of values. *Psychol Stud*. 1971;16(1):22–28.
7. Buch MB. *A Survey of Research in Education*. Baroda: M.S. University of Baroda; 1974.
8. Buch MB. *Third Survey of Research in Education*. Baroda: M.S. University of Baroda; 1987.
9. Buch MB. *Fifth Survey of Research in Education*. Vol. 1. New Delhi: NCERT; 1997. p. 392–418.
10. Fox CV. *Man, Moral and Society*. London: Duckworth; 1945.
11. Good CV. *Dictionary of Education*. USA: McGraw Hill; 1995.
12. तिवारी पीसी. भाषा की त्रुटियों की प्रकृति का निर्धारण एवं संस्कृत अध्ययन कार्यक्रम.
13. भारद्वाज दिनेशचन्द्र. हिंदी भाषा शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
14. डोडियाल सच्चिदानन्द, फाटक अरविन्द. शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
15. जोशी श्रीमती ओम. हिंदी शिक्षण. उदयपुर: राजस्थान शिक्षण संस्थान।
16. खन्ना इन्द्रजीत. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान. राजस्थान: शिक्षा विभाग।
17. कपूर श्यामचन्द्र. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 1976.
18. सिंह निरंजन कुमार. माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण. जयपुर: राजस्थान ग्रंथ अकादमी।
19. लालवटिया स्वर्णलता. हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि. इलाहाबाद: किताब महल; 1959.
20. शर्मा शिवराज, रामचन्द्र. राष्ट्रभाषा हिंदी की समस्याएं और समाधान. नई दिल्ली: आत्माराम एंड संस।
21. तिवारी गोविन्द. शैक्षिक एवं मनोविज्ञान के अनुसंधान के मूलाधार. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
22. त्रिपाठी सत्येन्द्र. अनुसंधान एवं सर्वेक्षण प्रविधि. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 1966.
23. कपिल एचके. अनुसंधान विधियां. आगरा: हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन; 1981.
24. गैरेट हेनरी ई. शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी (हिंदी अनुवाद). लुधियाना: कल्याणी पब्लिशर्स।
25. सुखिया एसपी, मेहरोत्रा. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the author

डॉ. हरीश कुमार मेनारिया शिक्षा विभाग में सहायक आचार्य हैं, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान में कार्यरत। उनका शिक्षाशास्त्र में गहरा अनुभव है और वे शिक्षक प्रशिक्षण, शैक्षिक अनुसंधान तथा शिक्षण पद्धतियों के विकास में सक्रिय रूप से योगदान देते हैं।

श्रीमती मोहसीना बानू मीरां टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, चित्तौड़गढ़ में व्याख्याता हैं। वे शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित हैं तथा प्रभावी शिक्षण, छात्र विकास और शैक्षिक गुणवत्ता सुधार हेतु निरंतर प्रयासरत रहती हैं।

© 2026 डॉ. हरीश कुमार मेनारिया, श्रीमती मोहसीना बानू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/